गांव की कहानी
गोविन्द साव

भगवान नारायण के आने पर गांव का नाम पड़ा नारायणपुर

छत्तीसगढ़ का बस्तर, सरगुजा और आदिवासी अंचल में प्राचीन और ऐतिहासिक महत्व के अनेक प्रमाण मिलते हैं। इतना ही मैदानी इलाकों में भी अनेक धार्मिक महत्व के स्थान देखने को मिलते हैं। इसी संदर्भ में माना जाता है कि प्रभु श्रीराम नदी मार्ग से होते हुए मल्हार से वर्तमान बलौदा बाजार - भाटापारा जिला अंतर्गत कसडोल के पास नारायणपुर पहुंचे थे। यह नारायणपुर राजधानी रायपुर से 35 कि मी दूरी पर महानदी के तट पर एक छोटा सा गांव है। नारायणपुर की इतिहास के सम्बन्ध में किंवदंती है कि श्रीराम वनगमन करते हुए नदी मार्ग से मल्हार के रास्ते हुए कसडोल क्षेत्र में प्रवेश कर नारायणपुर पहुंचे थे। इस ग्राम में स्थापित शिव मंदिर की शिल्पकला की कृतियां उत्कृष्ट एवं मनोहारी हैं। इस मंदिर के सम्बन्ध में किंवदंती है कि रामचन्द्र जी वनगमन के समय यहां पहुंच कर इस मंदिर में स्थापित शिवलिंग की पूजा अर्चना कर आगे वनगमन में बढ़े थे, चूंकि स्वयं नारायण (श्रीराम) के पग स्थान पर पड़े थे। अतः उन्हीं के नाम पर इस स्थान का नाम नारायणपुर रखा गया है।

लोक साहित्य
श्यामा सिंह

बघेली भाषा का प्रभाव क्षेत्र छत्तीसगढ़ में

मध्य भारत के बघेलखंड में बोली जाने वाली बोली बघेली कहलाती है। प्राचीन ग्रंथों में बघेलखंड का नाम करुष मिलता है। करुष का शाब्दिक अर्थ क्षुधा होता है। बघेली लोक जीवन अभावों और संकटों से घिरा रहा है। बघेलखंड के अन्य नाम भी मिलते हैं जैसे -बघेला, बघेलवारी, घेलान। बघेली मध्य प्रदेश के रीवा, सतना, सीधी, उमरिया, अनूपपुर, शहडोल, उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर, छत्तीसगढ़ के बिलासपुर एवं कोरिया जिलों में बोली जाती है। बघेली बोली के अन्य नाम भी मिलते हैं जैसे बघेलखंडी, रिमही, रिवाई और रिवॉई। बघेली पहले श्रीहर्ष लिपि में लिखी जाती थी। बघेलखंड के पूर्व में भोजपुरी, उत्तर में अवधी, पश्चिम में बुंदेली और दक्षिण पूर्व में छत्तीसगढ़ छत्तीसगढ़ी बोली जाती है। इसी बोली के आधार पर बघेली को तीन भागों शुद्ध बघेली,पश्चिम मिश्रित बघेली और दक्षिणी मिश्रित बघेली। इन तीनों बोली का प्रभाव क्षेत्र भी अलग अलग देखने को मिलता है। इनकी चार उपबोलियों में तिरहारी, गहोरा, जुड़ार और गोंडवानी हैं।

पुस्तक समीक्षा

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों एवं हिन्दी राष्ट्रीय गीतों का संग्रह

कृति के नाव
छत्तीसगढ़ी लोकगीतों एवं हिन्दी राष्ट्रीय गीतों का संग्रह

लेखक
दानीराम वर्मा

प्रकाशक
वर्मा प्रकाशन रायपुर

पुस्तक समीक्षा
डॉ. डी. पी. देशमुख

लेखक जीवन भर अपने शिक्षकीय दायित्वों को निर्वहन करते हुए अनेक शासकीय क्रियाकलापों को भी सहजता से निभाते रहे। इस दौरान समय निकाल कर लेखन भी करते रहे। अभी आप पूर्णकालीन साहित्य सेवा में लगे रहते हैं। आपकी कई कृतियां पूर्व में भी छत्तीसगढ़ी में प्रकाशित हो चुकी हैं। इसी क्रम में आपने ' छत्तीसगढ़ी लोक गीतों एवं हिन्दी राष्ट्रीय गीतों का संग्रह ' भी प्रकाशित कराया है, जिसमें प्रकृति चित्रण, खेत खलिहान, तीज तिहार, कला संस्कृति के पहलुओं को रेखांकित किया है। नाचा गीत, बरसा आगे, करम फुटहा, बोहरही मेला, महुआ छांव तले, चुल्लू भर पानी में डूब मरेंगे जैसे शीर्षकों से गीत लिख कर आंचलिकत संस्कृति को रखने का अच्छा प्रयास इस पुस्तक में देखने मिल रही है।

आदिवासी मुरिया समाज विभिन्न अवसरों पर कई प्रकार के गीत गाता है, जिसे अलग अलग नाम से पुकारा जाता है। मूरिया जनजाति के लोकगीत प्रायः ' रिलो रोयलो रिलो ' के अलाप से या इसी तर्ज पर गाया जाता है और जिसे भी नेग में गाते हैं उसे वही नाम दे दिया जाता है।

संस्कृतिः शिव कुमार पाण्डेय

वैवाहिक अवसरों पर आदिवासी मुरिया समाज का पाटा गीत

मंडप में चेलिक मोटियारिन गीत गाते हुए नृत्य करती हैं, इस गीत का नाम पूछने पर वे इसे मांडो पाटा (मंडप गीत) कह देते हैं, जबकि यह करसा पसीहना (कलश परिक्रमा) का ही एक भाग होता है। इसी तरह जोड़ा पाटा (विवाह सामग्री सौंपने का एक गीत) के एक भाग को गतलांग होपेकियाना पाटा (साड़ी सौंपने का गीत) कहा जाता है। विवाह के कई अवसरों पर गांव की महिलाएं समधी को आदर देते मजाक करते हुए गीत गाती हैं, इसे ' पारी पाटा ' (समधी गीत) कहा जाता है। इस गीत में समधी से निवेदन किया जाता है कि बेटी अब तुम्हारी हुई, इसको अच्छे से रखना यह अभी अबोध है, इसकी गलती माफ कर देना आदि। यह गीत विदाई का ही भाग है, जिसे समधी के सम्मान में गाया जाता है। इसी तरह करसा पाटा (खेल गीत) है। यह कोई खेल खेलते हुए नहीं बल्कि मनोरंजन के लिए गाया जाता है। केयना पाटा (बुलावा गीत) यह वर्षा नहीं होने पर वर्षा के आगमन के लिए गाया जाता है। उदना पाटा ' बैठक गीत ' यह बैठक के समय गाया जाता है। खुशी के पल को उजागर करने करने के लिए कोलांग पाटा गाया जाता है। इस प्रकार आदिवासी मुरिया समाज में हर संस्कार में उनके अपने गीत गाते हैं।

पर्यटनः अर्चना पाठक

महाशिवरात्रि पर मेले का आयोजन होता है भैंसामुंडा जलप्रपात में

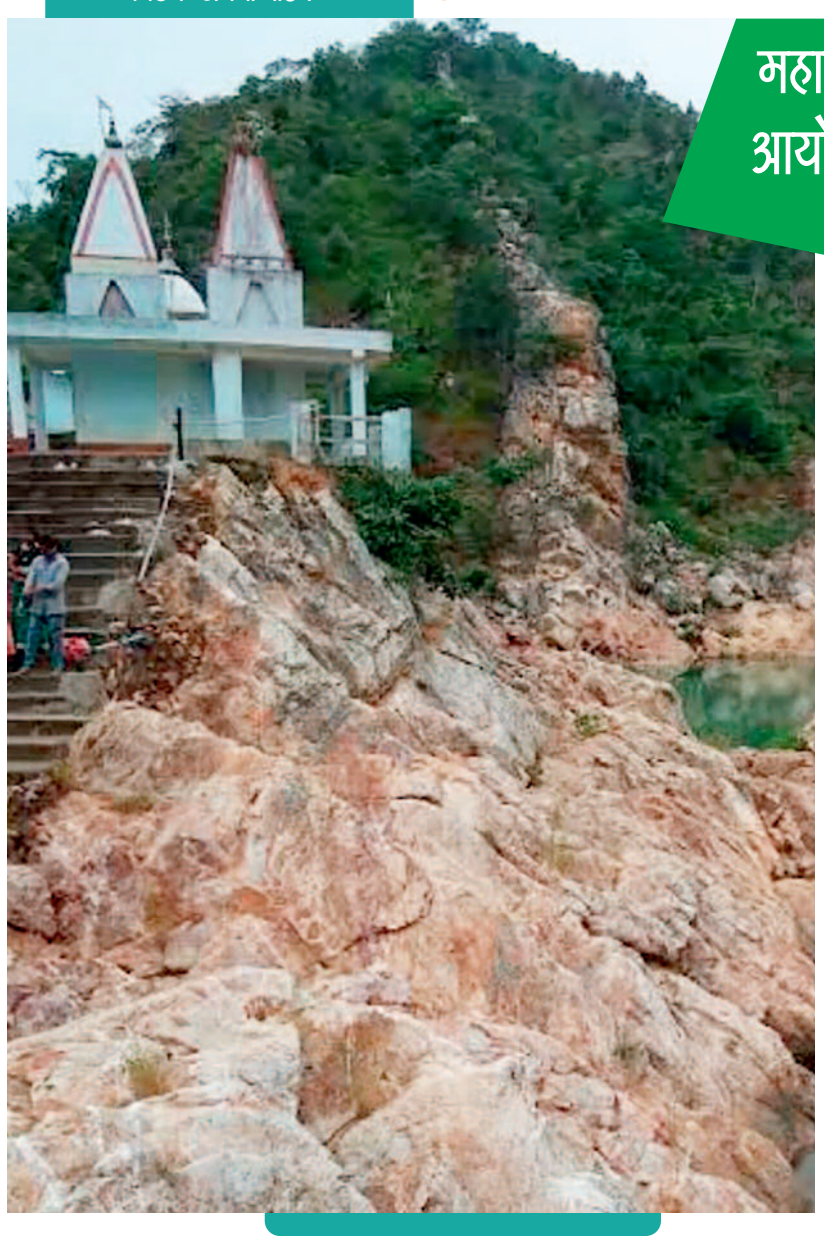

सरगुजा अंचल में अंबिकापुर -बनारस मार्ग में 40 कि मी दूरी पर भैंसामुंडा नामक स्थान है। यहां से एक अन्य मार्ग पर सारासोर स्थल है। इस स्थल पर नदी के तट पर दो पहाड़ियों के बीच से तेज गति में जलधारा बहती है। इस जलधारा के मध्य एक छोटा सा मंदिर है जिसे गंगा धाम के नाम से जाना जाता है। यहां पर टापू के पूर्वी उत्तर एवं पश्चिमी भाग में अथाह जल कुंड है। यहां वर्ष भर पर्यटक आते रहते हैं, तथा महाशिवरात्रि पर मेले का आयोजन भी होता है। यह मेला पहाड़ी की तराई पर निर्मित शिव मंदिर के पास लगता है। इस ऐतिहासिक मेले में अपार भीड़ देखी जाती है। इस ख्याति प्राप्त स्थल को देखने वर्ष भर पर्यटक आते रहते हैं।

सुरता
हरीशचंद्र वाद्यकार

दूरदर्शिता चित्रित होता था सागर की रचनाओं में

आशावादी रचनाकार गेंदराम सागर जी का जन्म बिलासपुर अंचल के शक्ति तहसील के टेमर गांव में सन 1943 को हुआ था। साहित्य के साथ कला क्षेत्र में रुझान होने के कारण आप अपने गांव के रेत पर मूर्तियां उकेरा करते थे। आप चिंतनशील व्यक्ति थे। शिक्षा के क्षेत्र में आदर्श शिक्षक के लिए राष्ट्रपति और राज्यपाल पुरस्कार के साथ ही अनेक सम्मान आपको मिले। समाज में फैली विद्रूपताओं को गंभीरता से सोचते और लिखते -

जात पात के भेद मिटाएन
छुआछूत के मेवा रे
जीयत भर ले करबो संगी
छत्तीसगढ़ के सेवा रे
बन के गाज कभू नई बरसन
करबो सबके सेवा रे।

सागर जी का रचना संसार व्यापक रहा है।

आपकी संग्रहित रचनाओं में कैवल्य भजन संग्रह,फूल भंवरा - छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह, गरीबीन के बेटी - छत्तीसगढ़ी खंडकाव्य, धरती मोर परान- छत्तीसगढ़ी नाटक, सती मोह - छत्तीसगढ़ी खंड काव्य। चंद्रहास - खंडकाव्य, श्री भगवती तुलसी चालीसा, श्री साईं चालीसा जैसे अनेक विधाओं पर आपकी लेखनी रही। कला, संस्कृति और साहित्य का अच्छा संतुलन आपके व्यावहारिक दिनचर्या में देखने को मिलता था। अचानक इस दुनिया से वे विदा हो गए। आज सागर जी हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनकी रचना संसार से हमारे आसपास ही उपस्थिति का अहसास हमें होता है।

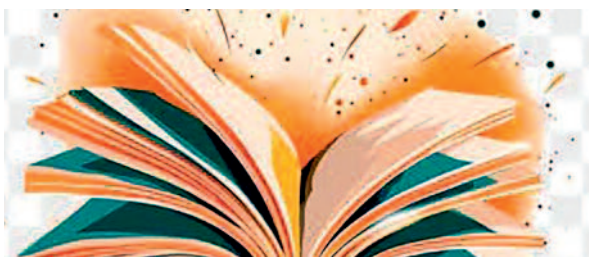

ऐतिहासिक
कृष्णा रंजन

सरगुजा में उतार चढ़ाव से भरा रहा अजीत सिंह का शासन काल

सन 1759 ई. में सरगुजा मराठों की सेना ने अकस्मात चढ़ाई कर दी और यहां के राजा को बरार की राजा की अधीनता स्वीकार कर लेने पर मजबूर कर दिया। इस समय सरगुजा में अजीत सिंह नामक राजा राज्य कर रहा था। उसे मराठों के समक्ष आत्मसमर्पण करना पड़ा, क्योंकि वह अत्यंत चालाक और कूटनीतिज्ञ तो था ही, सैन्य दृष्टिकोण से वह कमजोर भी था। समय पाकर सन 1792-93 के मध्य अजीत सिंह ने अंग्रेजों के विरुद्ध एक बलवा शुरू करवा दिया और खुद भी उसमें शामिल हो गया। इसका उसे सीधा लाभ मिला।

अजीत सिंह आगे बढ़ कर रांची जिले के बरवे परगना पर अधिकार कर लिया। उधर अंग्रेज सरकार ने अजीत सिंह, जिस बरार के राजा के अधीन था, उसे हस्तक्षेप कर स्थिति सुधारने की प्रार्थना की। बरार के कथित राजा ने तत्काल अजीत सिंह के विरुद्ध कार्यवाही की किन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। इसका दुष्परिणाम यह अवश्य हुआ कि हुआ कि अजीत सिंह स्वयं अपने गृह कलह में फंस गया। इसी चिंता में वह अंततः प्राण त्याग दिया। इसके मृत्यु के बाद उसका भाई लाल संग्राम सिंह सक्रिय हो गया। उसने छल से विधवा भाभी से छल कर सरगुजा की राजगद्दी पर बैठ गया। इससे सरगुजा में अशांति फैल गई। अंग्रेजों ने कर्नल जांस को शांति स्थापित करने के लिए सेना लेकर सरगुजा भेजा। यहां शांति स्थापित करने के बहाने अंग्रेजों ने लाल संग्राम सिंह को अंग्रेजी हुकूमत के सामने घुटने टेक कर समझौता करने के लिए मजबूर कर दिया। संग्राम सिंह इस घटना से भूमिगत हो गया और अजीत सिंह के नाबालिक बेटे बलभद्र सिंह के बेटे को सिंहासन पर बैठाया। राज्य कार्य के लिए अजीत सिंह के भाई जगन्नाथ सिंह को अधिकार दिया गया। किन्तु जैसे ही सरगुजा सीमा से अंग्रेज बाहर हुए वह पुनः आ डटा।